Research Article

शोध ज्ञानान्तिका (Shodh Gyanantika)
वर्ष 14 अंक 2 अप्रैल 2026: 194–198

ISSN 2277-582X
DOI: 10.66302/sg.vol.14.issue.02.33
Website: www.shodhgyanantika.com

तनाव उन्मूलन–सार्वभौमिक मूल्य–सत्य, सदाचार, शांति, प्रेम व अंहिसा

डॉ0 निरंजना शर्मा

राजनीति शास्त्र विभाग, राजकीय महाविद्यालय खाड़ी टि0ग0

***Corresponding Author Email**-dr.niranjanasharma@gmail.com

Received : March 2026
Revised : April 2026
Accepted : April 2026
Published : April 2026

HOW TO CITE THIS ARTICLE:

शर्मा, नि. (2026). तनाव उन्मूलन-सार्वभौमिक मूल्य-सत्य, सदाचार, शांति, प्रेम व अहिंसा. शोध ज्ञानानितका, 14(2), 194-198.

कॉपीराइट © 2026 लेखक(गण)। इसे D.A.V. (P.G.) कॉलेज, आर्य समाज रोड, मुज़फ़्फ़रनगर (U.P.)-250101 के राजनीति विज्ञान विभाग द्वारा प्रकाशित किया गया है। यह एक ओपन एक्सेस लेख है जिसे क्रिएटिव कॉमन्स एट्रिब्यूशन 4.0 इंटरनेशनल लाइसेंस (CC BY 4.0) (https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/) की शर्तों के तहत वितरित किया गया है। यह लाइसेंस किसी भी माध्यम में बिना किसी रोक-टोक के इस्तेमाल, वितरण और पुनरुत्पादन की अनुमति देता है, बशर्ते मूल काम का उचित संदर्भ दिया जाए।

मूल्य की अवधारणा

मूल्य की अवधारणा मनुष्य के प्रत्येक चुनाव, निश्चय, निर्णय तथा कार्य में विद्यमान है। जब हमें दो मनोरथों में चुनाव करते हैं उस मनोरथ को प्राप्त करने का निश्चय करते हैं जो अधिक श्रेष्ठ है और इसी निर्णय के अनुसार जीवन में कार्य करते हैं। इस चुनाव, निर्णय तथा निश्चय में उन वस्तुओं या मनोरथों के मूल्य की अवधारणा छीपी है। एक का मूल्य दूसरे अधिक ठहराया गया है। यदि ऐसा मूल्यांकन न होता, तो निर्णय कभी भी नहीं हो सकता था। प्रत्येक व्यक्ति अपने जीवन में प्रतिदिन ऐसे निर्णय करता रहता है। ये निर्णय उसे हर कदम पर करने पड़ते हैं, अन्यथा उसके लिए कार्य करना असम्भव हो जाये। वह एक वस्तु को पसन्द करता है, दूसरी को नापसन्द; एक व्यक्ति की प्रशंसा करता है, दूसरे की निन्दा करता है, एक कार्य को शुभ मानता है और दूसरे को अशुभ; एक विधि को ठीक और दूसरी को गलत समझता है, एक दृश्य को सुन्दर ठहराता है और दूसरे को असुन्दर। ये सारे निर्णय मूल्य की अवधारणा पर आधारित हैं। इनमें वस्तुओं का कोई मूल्य आंका जाता है और मूल्यांकन का कोई विशेष आधार या मापदण्ड प्रयोग में आता है। मानव मूल्यों के स्रोत क्या हैं। मानव मूल्य कहाँ से निकलते हैं। हम कहाँ से मूल्यों को प्राप्त करते हैं। सैद्धान्तिक जीवन में मूल्य विचार और चेतना से उत्पन्न होते हैं, परन्तु व्यवहार में मूल्यों के स्रोत हैं संविधान (Constitution), संस्कृति (Culture) और धर्म । इनमें संस्कृति मूल्यों का सबसे बड़ा और स्रोत है। संसार में सब कहीं लोग अपनी विशिष्ट संस्कृति से ही मूल्य प्राप्त करते हैं। संस्कृति के प्रमुख धर्म मूल्यों का स्रोत है। हिन्दू, बौद्ध, इस्लाम और ईसाई धर्म अपने अनुयायियों को जीवन मूल्य बतलाते हैं। धर्म ग्रन्थों में जीवन मूल्यों का उल्लेख होता है। अन्त में प्रत्येक सभ्य देश का संविधान के मूल्य दिखलाता है, जिनको वह विशिष्ट समाज मानता है। भारत, अमेरिका तथा सभी सभ्य राष्ट्रों के संविधान जनतन्त्रीय मूल्यों और मानव अधिकारों को मानते हैं। आज विश्व में मानव मूल्यों का सबसे और सबसे अधिक महत्वपूर्ण स्रोत मानवाधिकारों की सार्वभौम घोषणा है (अग्निहोत्री रविन्द्र, 2006)। इसे प्रत्येक सभ्य देश का संविधान स्वीकार करता है।

मूल्यों का स्त्रोत– संविधान

मौलिक अधिकार

- समानता का अधिकार
- स्वतन्त्रता का अधिकार
- शोषण के विरुद्ध अधिकार
- धार्मिक स्वतन्त्रता का अधिकार
- सांस्कृतिक तथा शैक्षणिक अधिकार
- संवैधानिक उपचारों का अधिकार

मूल कर्त्तव्य

1976 में 42 वें संविधान संशोधन द्वारा संविधान के भाग चार में ए जोड़कर 10 मूल कर्त्तव्य शामिल किये गये। प्रत्येक नागरिक का कर्तव्य है कि वह संविधान का पालन करे तथा राष्ट्रीय ध्वज तथा राष्ट्रीय गीत का सम्मान करे, स्वतन्त्रता आन्दोलन के दौरान स्थापित उच्च आदर्शों पर चले, राष्ट्र की एकता व अखण्डता की रक्षा करे, धार्मिक भाषायी तथा क्षेत्रीय विभिन्नताओं से ऊपर उठकर सब लोगों में सद्भाव तथा भाई–चारे की भावनाओं को बढ़ावा दे, वनों तथा प्राकृतिक वातावरण की रक्षा करे, जीवन के प्रति वैज्ञानिक दृष्टिकोण अपनाये तथा सार्वजनिक सम्पत्ति की रक्षा करे।

संयुक्त राष्ट्र संघ की मानवाधिकारों की घोषणा

संयुक्त राष्ट्र संघ के चार्टर में मानव अधिकार सम्बन्धी व्यवस्था

- संयुक्त राष्ट्र संघ के चार्टर की प्रस्तावना – "मानव के मौलिक अधिकारों, मानव के व्यक्तित्व के गौरव तथा महत्त्व में तथा पुरुष और स्त्रियों के समान अधिकारों में आस्था प्रकट की जाती है।"
- धारा 1–"संयुक्त राष्ट्र का उद्देश्य मानवाधिकारों के प्रति सम्मान को प्रोत्साहन देना तथा जाति, लिंग या धर्म के बिना किसी भेदभाव के मौलिक अधिकारों को बढ़ावा देना तथा प्रोत्साहित करना।"
- धारा 13 – "महासभा के द्वारा जाति, लिंग, भाषा या धर्म के भेदभाव के बिना सभी को मानवाधिकार तथा मूलभूत स्वतन्त्रताओं की प्राप्ति में सहायता दी जाएगी (गुप्ता, एस०पी० तथा अलका गुप्ता)।"
- धारा 55 – संयुक्त राष्ट्र सं जाति, लिंग, भाषा या धर्म के मानवाधिकार तथा मूलभूत स्वतन्त्रताओं को प्रोत्साहन देगा।
- धारा 56–सभी सदस्य राष्ट्र मानवाधिकारों तथा मानवीय स्वतन्त्रताओं की प्राप्ति के लिए संयुक्त राष्ट्र संघ को अपना सहयोग प्रदान करेंगे।
- धारा 62 – "आर्थिक तथा सामाजिक परिषद् सभी के लिए मानवाधिकारों तथा मूलभूत स्वतन्त्रताओं के प्रति सम्मान की भावना बढ़ाने तथा उनके पालन के सम्बन्ध में सिफारिश करेगी।"

संस्कृति

सामाजिक मूल्य वे सामाजिक मानदंड, लक्ष्य या आदर्श हैं जिनके आधार पर विभिन्न सामाजिक परिस्थितियों तथा विषयों का मूल्यांकन किया जाता है। ये मूल्य हमारे लिए कुछ अर्थ रखते हैं और उन्हें हुम अपने सामाजिक जीवन के लिए महत्वपूर्ण समझते हैं। इन मूल्यों की एक सामाजिक–सांस्कृतिक पृष्ठभूमि होती है, इसीलिए प्रत्येक समाज के मूल्यों में हमें भिन्नता देखने को मिलती है। उदाहरण के लिये भारतीय समाज में हिन्दुओं के विवाह में एक विशिष्ट सामाजिक मूल्य यह है कि विवाह एक पवित्र व धार्मिक बन्धन है, जिसे अपनी इच्छानुसार नहीं तोड़ा जा सकता। इसमें पवित्रता तभी बनी रह सकती है जबकि पति–पत्नी एक दूसरे के प्रति वफादार बने रहें। इन मूल्यों का सामाजिक प्रभाव यह होता है कि हिन्दुओं में विवाह विच्छेद की भावना नहीं पनप पाती और विधवा–विवाह को उचित नहीं माना जाता। इसके विपरीत अमेरिकन समाज में विवाह से सम्बन्धित मूल्यों का नितान्त अभाव होने के कारण विवाह – विच्छेदया विधवा विवाह निन्दनीय नहीं है। सामाजिक मूल्य सामाजिक मानदंड हैं. जोकि सामाजिक जीवन के अन्तःसम्बन्धों को परिभाषित करने में सहायक होते हैं।

सामाजिक मूल्य

- **प्रेम व सत्य** –जीवन में सामाजिक मूल्यों का बड़ा महत्व है। सामाजिक जीवन में प्रेम सब से बड़ा मूल्य है और उसी की धुरी पर अन्य सामाजिक मूल्य घूमते हैं। सामाजिक सम्बन्ध प्रेम पर आधारित हैं। प्रेम ही अहिंसा का रूप धारण करता है। सामाजिक सम्बन्धों को सत्य का भी आधार चाहिये। इस लिए प्रेम और सत्य दो उच्चतम सामाजिक मूल्य हैं। सत्य समाज में निष्कपटता के रूप में प्रकट होता है। छल और धोखे पर निर्भर सामाजिक सम्बन्ध अस्थिर होते हैं। प्रेम व सत्य सामाजिक जीवन में सुख और उन्नति लाते हैं। वही स्थायी और शाश्वत हैं। सामाजिक झगड़ों को प्रेम व सत्य से दूर करना चाहिये। इन करने के लिए सर्वोदय क्रान्ति व हिंसा को अनिवार्य नहीं समझता जैसे मार्क्स मानता है। सर्वोदय हृदय परिवर्तन के समाधान के लिए अहिंसात्मक साधन का प्रयोग करना उचित है। सामाजिक परिवर्तन लाने व न्याय प्राप्त से सामाजिक संघर्ष को हल करने के पक्ष में है (गुप्ता, एस०पी० तथा अलका गुप्ता, 2012)।
- **समानता**– सभी मनुष्य बराबर हैं। सभी में एक जैसी आत्मा है। सभी में मनुष्यता है ! सभी प्रकार के सामाजिक अन्तर न केवल अस्वाभाविक हैं अपितु गलत हैं जैसे अमीर–गरीब, उच्च–नीच, प्रशासक–प्रशासित, आदि में। एक श्रमिक का कार्य एक प्रोफैसर (बुद्धि जीवी) के समान है। कृत्रिम भेदभावों को अहिंसा व प्रेम से दूर करना चाहिये (कबीर हुमायूँ, 1956)।
- **सहयोग** – प्रत्येक व्यक्ति को चाहिये कि वह अपनी योग्यता व कुशलता का समाज को योगदान दे और केवल अपने लिए ही कार्य न करे । सहयोग असंग्रह पर निर्भर है। जो कुछ है, वह सब का है।
- **अशोषण** – यदि कोई समाज प्रेम व न्याय पर स्थापित होगा, तो समानता उसका फल होगा। न्याय और समानता से शोषण की अवस्था कभी पैदा नहीं हो सकती। एक व्यक्ति या वर्ग दूसरे का शोषण न करे।

- **सहानुभूति व आदर**–समाज के संगठन का रहस्य यह है कि एक व्यक्ति दूसरे का आदर करता है और विशेष स्थिति में उससे सहानुभूति करता है। दया, सहानुभूति के भाव मनुष्य के आध्यात्मिक स्वरूप से उत्पन्न होते हैं। यदि सभी में समान आत्मा है, प्रत्येक का समान आदर होना चाहिए। बाइबिल का कथन है, "Love thy neighbour as thy & self." हमारे पड़ोसी में हमारी ही आत्मा है। विनोबा जी ने कहा था दूसरों की भलाई करो और उसके बदले कुछ न मांगो।

धार्मिक मूल्य

मानवता की सेवा मनुष्य का सबसे बड़ा धर्म है। धर्म का अर्थ मानवता का उत्थान करना है। धर्म का अर्थ कोरा सिद्धान्त व विश्वास नहीं है जो मनुष्य के जीवन में उतर कर उसे परिवर्तित नहीं करता । सच्चा धर्म कार्य में प्रकट होता है और वह जीवन का मार्ग प्रदर्शन करता है। गाँधी जी लिखते हैं- "Life without religion, I hold, is life without principle" धर्म के बिना मनुष्य अपने उद्देश्य तक नहीं पहुंच सकता। वह मार्ग में ही भटक जाता है। सच्चा धर्म मनुष्य के आन्तरिक जीवन को परिवर्तित करता है। यह सत्य से एकदम जुड़ा हुआ है। यह मानव स्वभाव पर आधारित है। यह हृदय को शान्ति प्रदान करता है, क्योंकि मनुष्य और उस के स्वामी (God) में सम्पूर्ण तालमेल होना चाहिये।

पाँच सार्वभौम मूल्य

1. सत्य (Truth)

सर्वोदय के दर्शन में सत्य को उच्चतम स्थान व महत्त्व प्राप्त है। गांधी जी सत्य को ही ईश्वर मानते हैं। वे कहते हैं कि सत्य को प्राप्त करना ही मनुष्य का परम धर्म है। यह सत्य एक सत्ता है, एक वास्तविकता है। "सत्य" असल में "सत" से निकला है। सत् का अर्थ सत्ता या वास्तविकता है। जो उस सत्ता के अनुकूल है, वह सत्य है (Truth is that which is according to the reality)- यह सत्ता अनुभवातीत है, यह ईश्वर है। सत्य को प्रमाणित करने के लिए हमें प्रयोग करने पड़ते हैं। प्रयोग का अर्थ यह देखना है कि क्या यह सत्य कार्य में उतरता है। सत्य को जीवन में ढालने से क्या होता है? यही प्रयोग है, यही प्रमाण है। सत्य कार्य के परिणामों द्वारा प्रमाणित नहीं होता बल्कि सत्य उन से पूर्व विद्यमान था (गुप्ता, एस0पी0 तथा अलका गुप्ता)। सत्य हमारा अन्तिम लक्ष्य है। जो कार्य सत्य पर आधारित होता है, वह शुभ है। गांधी जी ने मानवता को सत्याग्रह (Holding on to Truth) का आदर्श दिया है जो सत्य को जीवन में व्यावहारिक रूप देता है। प्रत्येक मनुष्य सत्याग्रही है, उसे सत्य के लिए यत्न करना चाहिए और उस समय तक संघर्ष जारी रखना चाहिए जब तक सत्य प्रकाशित नहीं हो जाता। सत्याग्रही का यह दृढ़ विश्वास होना चाहिए कि वह सत्य पर खड़ा है और सत्य की अन्तिम रूप में विजय होगी।

2. सदाचार (Righteous Conduct)

सदाचार नैतिक अधिकारों का प्रयोग और नैतिक कर्त्तव्यों का पालन है। यह न्याय और सर्वजन कल्याण अथवा सर्वोदय है।

नैतिक अधिकार

- **जीने का अधिकार (Right to live)** – जीने का अधिकार मनुष्य का सर्वप्रथम और मुख्य अधिकार है। नैतिक जीवन का लक्ष्य आत्मलाभ है और आत्मलाभ करने के लिये जीवन एक अनिवार्य शर्त है। जीवन का अधिकार मौलिक (Fundamental) अधिकार है। यह एक पवित्र अधिकार है। जीने के अधिकार में काम करने का अधिकार भी सम्मिलित है । जीविकोपार्जन के बिना जीवन की आवश्यकतायें पूरी नहीं की जा सकतीं। बेकार व्यक्ति का जीवन ही कठिन हो जाता है। जीवन के अधिकार के साथ जीवन के सम्मान का वितव्य भी लगा हुआ है। यदि प्रत्येक व्यक्ति को अपने जीवन को रखने का अधिकार है तो उसका कर्त्तव्य है कि दूसरों को ऐसा करने में सहायता दे अथवा कम से कम ऐसा करने में बाधक न बने। इस कर्त्तव्य की अवहेलना करने पर जीने का अधिकार छिन सकता है। इसीलिये हत्या करने का अपराध होने पर मृत्युदण्ड की सजा मिलती है। अतः मनुष्य को अपने तथा दूसरों के जीवन की वृद्धि करनी चाहिये।
- **स्वतन्त्रता का अधिकार (Right of Freedom)** – जीने के अधिकार के पश्चात् स्वतन्त्रता का अधिकार भी अत्यन्त महत्वपूर्ण है। समस्त नैतिक कार्य मनुष्य के स्वतन्त्र संकल्प पर निर्भर है। स्वतन्त्रता के बिना नीति अथवा नैतिक कार्यों की कल्पना असंभव है। मानव की संकल्प की स्वतन्त्रता नीतिशास्त्र की मौलिक मान्यता है। आत्म–लाभ के सर्वोच्च श्रेय की प्राप्ति के लिये स्वतन्त्रता का अधिकार आवश्यक है। व्यक्ति किसी अन्य के लाभ का साधन नहीं बनाया जा सकता। प्रत्येक व्यक्ति स्वयं साध्य है। उसको अपना श्रेय प्राप्त करने की स्वतन्त्रता है। प्रकृति ने उसको स्वतन्त्र उत्पन्न किया है। वह किसी का दास नहीं है (सक्सैना, एन0आर0स्वरूप तथा डॉ0 शिखा चतुर्वेदी)।

3. शान्ति (Peace)

शान्ति स्थापना के उपाय

शन्ति स्थापना के लिये सामान्यतया वे सब उपाय काम में लाये जाते हैं जिनसे अन्तर्राष्ट्रीय तनाव दूर होते है। Psychological Bulletin में प्रकाशित आलपोर्ट के प्रसिद्ध निबन्ध Human Nature and the शान्ति स्थापना के लिये सामान्यतया वे सब उपाय काम में लाये जाते हैं जिनसे अन्तर्राष्ट्रीय तनाव दूर होते. Peace में अमरीकन समाचारपत्रों में दस सिद्धान्तों के एक वक्तव्य का उल्लेख किया गया है

जिसमें द्वितीय महायुद्ध के समय दो हजार से अधिक अमरीकन मनोवैज्ञानिकों ने हस्ताक्षर किये थे। इस वक्तव्य के सिद्धान्तों का सारांश निम्नलिखित हैं

- **युद्ध अनिवार्य नहीं है**– युद्ध से बचा जा सकता है क्योंकि वह जन्मजात नहीं होता। कोई भी प्रजाति, राष्ट्र या सामाजिक समूह अनिवार्य रूप से युद्ध–प्रेमी नहीं होता । युद्धों के मूल में कुछ हताशायें और स्वार्थों के संघर्ष होते हैं। शिक्षा और सामाजिक दशाओं के सुधार से युद्ध के कारणों को दूर किया जा सकता है।
- **शान्ति की योजना में भावी पीढ़ी का महत्व**– शान्ति की योजना भावी पीढ़ी पर आधारित होनी चाहिये क्योंकि उसका स्वभाव नमनीय होता है। बालक सरलता से एकता के सिद्धान्तों को समझ सकते हैं और ऐसा व्यवहार अपना सकते हैं जिसमें साम्राज्यवाद, पक्षपात, असुरक्षा और अज्ञानता के दुर्गुण कम से कम हों।
- **घृणा और पक्षपात पर नियन्त्रण**– शिक्षा और अनुभव के द्वारा मनुष्यों के राष्ट्रीय और सामूहिक पूर्वाग्रहों और घृणा को नियन्त्रित किया जा सकता है। मनुष्य यह जान सकते हैं कि सभी प्रजातियों, राष्ट्रों और समूहों के सदस्य एक से होते हैं और उनमें एक सी ही समस्यायें, आशायें, आकांक्षायें और आवश्यकतायें भी होती हैं। इस बात को जानने से लोगों में पूर्वाग्रह दूर हो सकते हैं।
- **समानता का प्रचार**– युद्ध को रोकने और स्थायी शान्ति की स्थापना के लिए हर प्रकार का भेद–भाव दूर किया जाना चाहिये। धर्म, प्रजाति, राष्ट्र अथवा किसी भी अन्य भेद पर आधारित पृथक्करण नीति से तनाव बढ़ते हैं।
- **स्वशासन में अनावश्यक हस्तक्षेप का प्रभाव**– शान्ति के लिये यह आवश्यक है कि विभिन्न राष्ट्र के लोगों को स्वशासन का अधिकार दिया जाये और साथ ही उसमें अन्य देशों की ओर से कम से कम हस्तक्षेप हो। ऐसा न होने पर जनता के अन्दर अन्दर विद्रोह की आग सुलगती रहती है जो स्थायी शान्ति के लिये भारी खतरा है।
- **उचित दण्ड और पुरस्कार**– युद्ध में हारे हुए और युद्ध में जीते हुए व्यक्तियों को दण्ड और पुरस्कार देने में बड़ी बुद्धिमता से काम लेने की जरूरत है जिससे केवल दोषी व्यक्तियों को ही दण्ड मिले और निर्दोष व्यक्ति के साथ सख्ती न हो।

4. प्रेम (Love)

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे भवन्तु निरामयः ।
सर्वे भद्राणि पष्यन्तु मा कस्यचिद्भागभवेत्?

प्रत्येक हिन्दू कार्य आरम्भ करते समय यह प्रार्थना गाता है। इस श्लोक का यह अर्थ है कि सभी सुखी हों, सभी कपट रहित हों, सभी की भलाई हो और किसी को कोई विपदा न हो। इस प्रार्थना की पूर्ण भावना प्रेम के अर्थ में अन्तर्निहित है। पाश्चात्य दर्शन का उपभोगवादी आदर्श भी यही कहता है कि अधिक से अधिक लोगों का अधिक से अधिक सुख प्राप्त करना ही मनुष्य मात्र का आदर्श है। (The greatest happiness of the greatest number is the ideal of man) प्रेम का भी यही अर्थ है। गान्धी जी रसकिन (Ruskin) की पुस्तक 'Unto This Last' में अर्थशास्त्र व राजनीति को नैतिक दृष्टिकोण से प्रस्तुत किया गया है। ठीक उसी प्रकार का दर्शन सर्वोदय भी है और गान्धी जी स्वयं इस बात को मानते हैं कि वे टाल्सटॉय (Tolstoy) व रसकिन (Ruskin) से सबसे अधिक प्रभावित हुए हैं। भगवद् गीता का निष्काम योग तो सर्वोदय का प्राण है।

5. अहिंसा (Non&Violence)

अहिंसा का साधारण अर्थ हत्या न करना है और यह मनुष्य का एक मौलिक कर्त्तव्य है कि वह जीवित रहने दे (Live and Let others Live)। गांधी जी के लिए अहिंसावाद एक सिद्धान्त है और किसी दूसरे जीव की हत्या न करे, क्योंकि वह स्वयं भी जीवित रहता है, इसलिए वह दूसरों को भी जीवन का मार्ग है। अहिंसावाद की व्याख्या में निम्नलिखित बातें वर्णनीय हैं–

- **अहिंसावाद विधानात्मक है (Non&Vioence is Positive)** अहिंसावाद निषेधात्मक है जिससे किसी प्राणी को हानि होती है या वह तंग होता हो, उसकी भावनाओं को चोट लगती हो या सिद्धान्त नहीं है। यह मनुष्य को केवल हत्या करने से ही नहीं रोकता, अपितु उस प्रत्येक कार्य से रोकता मिलता हो। यह अहिंसा के संकुचित निषेधात्मक अर्थ का विस्तार है। नैतिक कर्त्तव्य तो केवल की हत्या न करना है, परन्तु यह कर्त्तव्य प्राणीमात्र के प्रति है और सभी प्रकार के दुःखद कार्य को निषेध करता है। इसका विधानात्मक पक्ष यह है कि मनुष्य का कर्त्तव्य प्राणीमात्र के लिए सेवा भाव रखना, उनसे प्रेम करना, उनकी रक्षा करना तथा उनकी भलाई के कार्य करना है। निःस्वार्थ पर आधारित दुःख मनुष्य परोपकार अहिंसावाद है।
- **अहिंसा बलवान का गुण है (Non&Violence is the Creed of the Brave)** अहिंसावाद को कायरता समझना भूल है, क्योंकि यह केवल बलवान् का ही गुण हो सकता है। जिस व्यक्ति में इतना बल, शक्ति या साहस ही नहीं कि वह दूसरे व्यक्ति कि हिंसा करे, तो उसके अहिंसावादी होने का प्रश्न ही पैदा नहीं होता (गुप्ता, एस०पी०, 2008)। परन्तु जो व्यक्ति दूसरे की हत्या या हानि करने में समर्थ है या हिंसा करने की शक्ति रखता है और ऐसा होते हुए भी वह अपने हिंसात्मक बल पर संयम रखता है। और उसका प्रयोग नहीं करता, वही सच्चा अहिंसावादी है। इस प्रकार अहिंसावाद व्यक्ति या राष्ट्र की अहिंसावादी शक्ति के साथ अनुपात रखता है। जितनी हिंसात्मक शक्ति अधिक होगी, उतना ही वह अहिंसावादी होगा। जैसे यदि चीन के आक्रमण में भारत यह कहे कि वह अहिंसावादी है, इसलिए उसके आक्रमण का उत्तर नहीं देता,

तो यह गलत है परन्तु यदि चीन भारत को नष्ट करने की शक्ति रखता हुआ में भी उसे हानि नहीं पहुँचाता तो वह अहिंसावादी होगा। इसलिए अहिंसावाद बलवान का ही सिद्धान्त हो सकता है, निर्बल का नहीं।

- **अहिंसावाद सच्चा मानवीय आदर्श है (Non&Violence is a truly Human Ideal)** अहिंसावाद मनुष्य में दुःख सहने की शक्ति जगाता है, क्योंकि यह तप तथा त्याग का मार्ग है। जो मनुष्य सब कुछ कर सकता है परन्तु करता नहीं, तो यह उसकी आध्यात्मिक शक्ति पर निर्भर है। आध्यात्मिक शक्ति केवल मनुष्य का ही स्वरूप है। इसलिए अहिंसावाद केवल मनुष्यों का ही सिद्धान्त हो सकता है, पशु का नहीं। पशु हिंसावादी होता है क्योंकि उसमें संयम नहीं है और न ही आध्यात्मिक तत्व है। किसी व्यक्ति को मार कर गिराना सुगम है, परन्तु सहन करना कठिन है। सहनशक्ति से आध्यात्मिक भावना जागती है और सभी प्राणियों के लिए प्रेम–भावना उमड़ती है। प्रेम देता है, लेता नहीं है। प्रेम त्याग करता अहिंसावाद सच्चा मार्ग है। मानव सभ्यता व संस्कृति का विकास तथा मानव उत्कर्ष का अभ्युदय निःसन्देह मानव के बुद्धि, चातुर्य, विवेक तथा सद्गुणों की परिणिति स्वीकार किया जा सकता है। अपने अद्भुत गुणों के कारण मानव ने स्वयं का सर्वांगीण विकास करते हुए प्राकृतिक संसाधनों तथा प्राणि व वनस्पति जगत की सहायता से स्वयं के जीवन को सुखप्रद बनाया है।

सन्दर्भ सूची

अग्निहोत्री रविन्द्र (2006) आधुनिक भारतीय शिक्षा की समस्यायें और समाधान, जयपुरः राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी।

अग्रवाल, जे०सी० (1993) लैंडमार्क्स इन दॉ हिस्ट्री ऑव–मॉडर्न इण्डियन एजूकेशन; नई दिल्ली : वाणी बुक्स ।

कबीर हुमायूँ (1956)– स्वतन्त्र भारत में शिक्षा; दिल्ली : राज्यपाल एण्ड सन्स।

गुप्ता, एस०पी० तथा अलका गुप्ता (2012)–भारतीय शिक्षा का तानाबाना, इलाहाबाद : शारदा पुस्तक भवन।

गुप्ता, एस०पी० तथा अलका गुप्ता (2008)–भारतीय शिक्षा का सफरनामा, इलाहाबाद : शारदा पुस्तक भवन।

सक्सैना, एन0आर0स्वरूप तथा डॉ0 शिखा चतुर्वेदी –उदियमान भारतीय समाज में शिक्षा, आर0 लाल0 बुक डिपो मेरठ।

गुप्ता, एस0पी0 तथा अलका गुप्ता– समकालीन भारत और शिक्षाशारदा पुस्तक भवन इलाहाबाद।

गुप्ता, एस०पी० तथा अलका गुप्ता – भारतीय शिक्षा का इतिहास, विकास एवं समस्यायें, शारदा पुस्तक भवन इलाहाबाद।